

पावती चालीसा

दोहा

जय गिरी तनये दक्षजे शंभु प्रिये गुणखानि।
गणपति जननी पार्वती अम्बे! शक्ति! भवानि॥

चौपाई 1

ब्रह्मा भेद न तुम्हरो पावे।
पंच बदन नित तुमको ध्यावे॥

चौपाई 2

षड्मुख कहि न सकत यश तेरो।
सहस्रबदन श्रम करत घनेरो॥

चौपाई 3

तेऊ पार न पावत माता।
स्थित रक्षा लय हित सजाता॥

चौपाई 4

अधर प्रवाल सदृश अरुणारे।
अति कमनीय नयन कजरारे॥

चौपाई 5

ललित ललाट विलेपित केशर।
कुंकुम अक्षत शोभा मनहर॥

चौपाई 6

कनक बसन कंचुकी सजाए।
कटि मेखला दिव्य लहराए॥

चौपाई 7

कंठ मदार हार की शोभा।
जाहि देखि सहजहि मन लोभा॥

चौपाई 8

बालारुण अनन्त छबि धारी।
आभूषण की शोभा प्यारी॥

चौपाई 9

नाना रत्न जटित सिंहासन।
तापर राजति हरि चतुरानन॥

चौपाई 10

इन्द्रादिक परिवार पूजित।
जग मृग नाग यक्ष रव कूजित॥

चौपाई 11

गिर कैलास निवासिनी जय जय।
कोटिक प्रभा विकासिन जय जय॥

चौपाई 12

त्रिभुवन सकल कुटुम्ब तिहारी।
अणु अणु महं तुम्हारी उजियारी॥

चौपाई 13

हैं महेश प्राणेश! तुम्हारे।
त्रिभुवन के जो नित रखवारे॥

चौपाई 14

उनसो पति तुम प्राप्त कीन्ह जब।
सुकृत पुरातन उदित भए तब॥

चौपाई 15

बूढ़ा बैल सवारी जिनकी।
महिमा का गावे कोउ तिनकी॥

चौपाई 16

सदा श्मशान बिहारी शंकर।
आभूषण है भुजंग भयंकर॥

चौपाई 17

कण्ठ हलाहल को छबि छायी।
नीलकण्ठ की पदवी पायी॥

चौपाई 18

देव मगन के हित अस कीन्हों।
विष लै आपु तिनहि अमि दीन्हों॥

चौपाई 19

ताकी तुम पत्नी छवि धारिणि।
दुरित विदारिणि मंगल कारिणि॥

चौपाई 20

देखि परम सौन्दर्य तिहारो।
त्रिभुवन चकित बनावन हारो॥

चौपाई 21

भय भीता सो माता गंगा।
लज्जा मय है सलिल तरंगा॥

चौपाई 22

सौत समान शम्भु पहआयी।
विष्णु पदाब्ज छोड़ि सो धायी॥

चौपाई 23

तेहिकों कमल बदन मुरझायो।
लखि सत्वर शिव शीश चढ़ायो॥

चौपाई 24

नित्यानन्द करी बरदायिनी।
अभय भक्त कर नित अनपायिनि॥

चौपाई 25

अखिल पाप त्रयताप निकन्दिनि।
माहेश्वरी हिमालय नन्दिनि॥

चौपाई 26

काशी पुरी सदा मन भायी।
सिद्ध पीठ तेहि आपु बनायी॥

चौपाई 27

भगवती प्रतिदिन भिक्षा दात्री।
कृपा प्रमोद सनेह विधात्री॥

चौपाई 28

रिपुक्षय कारिणि जय जय अम्बे।
वाचा सिद्ध करि अवलम्बे॥

चौपाई 29

गौरी उमा शंकरी काली।
अन्नपूर्णा जग प्रतिपाली॥

चौपाई 30

सब जन की ईश्वरी भगवती।
पतिप्राणा परमेश्वरी सती॥

चौपाई 31

तुमने कठिन तपस्या कीनी।
नारद सों जब शिक्षा लीनी॥

चौपाई 32

अन्न न नीर न वायु अहारा।
अस्थि मात्रतन भयउ तुम्हारा॥

चौपाई 33

पत्र घास को खाद्य न भायउ।
उमा नाम तब तुमने पायउ॥

चौपाई 34

तप बिलोकि रिषि सात पधारे।
लगे डिगावन डिगी न हारे॥

चौपाई 35

तब तव जय जय जय उच्चारैउ।
सप्तरिषी निज गेह सिधारैउ॥

चौपाई 36

सुर विधि विष्णु पास तब आए।
वर देने के वचन सुनाए॥

चौपाई 37

मांगे उमा वर पति तुम तिनसों।
चाहत जग त्रिभुवन निधि जिनसों॥

चौपाई 38

एवमस्तु कहि ते दोऊ गए।
सुफल मनोरथ तुमने लए॥

चौपाई 39

करि विवाह शिव सों हे भामा।
पुनः कहाई हर की बामा॥

चौपाई 40

जो पढ़िहै जन यह चालीसा।
धन जन सुख देइहै तेहि ईसा॥

समापन दोहा

कूट चंद्रिका सुभग शिर जयति जयति सुख खानि।
पार्वती निज भक्त हित रहहु सदा वरदानि॥